कैमीभूड़ मर रहा है!

हाथी नहीं मरा है महाराज!!

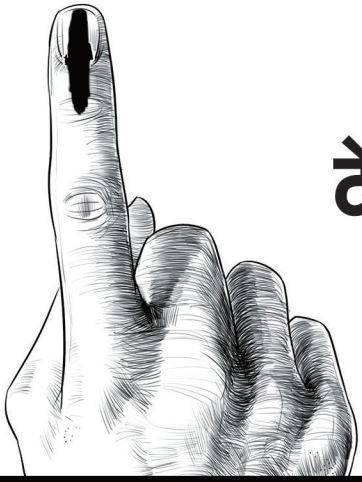

देवेन्द्र

इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि 'कैमीभूड़' कहाँ है? देश के मानचित्र पर काली बिन्दियों से दर्शाए गए असंख्य गांवों की शक्ल इससे किसी भी तरह अलग नहीं है। हर पगडंडी जहां जाकर खत्म हो जाती है वहीं आपको कैमीभूड़ मिल जाएगा। कैमीभूड़, यानी कर्ज और यातना के अंधेरे में छटपटाता गांव, जहां किसान एक-एक कर आत्महत्याएं कर रहे हैं। लोकतंत्र के नाच घर में थोड़ी देर के लिए बत्ती गुल होती है। शोक संवेदनाएं पढ़ी जाती हैं। पालतू अर्थशास्त्रियों की भीड़ संसेक्स के तापमान को देखकर आश्वस्त हैं कि विकास की दर बेहतर है जबकि यहाँ रात-दिन आजादी के सपनों का संहार हो रहा है। लखीमपुर-खीरी जनपद मुख्यालय से 37 किलोमीटर दूर कैमीभूड़ का सीमान्त, जहां से एक साथ सिर्फ दो ही रास्ते अलग-अलग दिशाओं की ओर जाते हैं। एक नक्सलबाड़ी की ओर और दूसरा राजधानी के सुरक्षित और संरक्षित राजमार्ग पर, जहाँ संसद है, न्यायपालिकाएं हैं, अमीन का दफ्तर है। 15 अगस्त 1947 की आधी रात को कैमीभूड़ के लैम्पपोस्ट पर उम्मीद की जो लालटेन लटका दी गई थी, उसमें कालिख और धुआं भर चुका है।

लाश होने से पहले थरथराती कांपती देह की जान में जितनी सांस होती है उतनी ही सांस कैमीभूड़ के हिस्से मयस्सर है। यहां एक वीभत्स तबाही का खौफनाक मंजर है। शकों, हूणों या मंगोलों ने नहीं, विशुद्ध आर्य नस्ल के भारतीय प्रशासनिक ढाँचे ने कैमीभूड़ को उजाड़ा है और बर्बाद किया है। आर्थिक उदारीकरण और मनमोहनी विकास की परिकल्पना में कैमीभूड़ एक ऐसे वोट बैंक की तरह है जो नए अर्थतंत्र में असुविधा पैदा करते हुए बेवजह सताता रहता है जबकि वे कैमीभूड़ के जनतंत्र का मतलब जानते हैं। एक ऐसा जनतंत्र, जहाँ आपको अपने विरोध में काम करने वाली तमाम सरकारों में से किसी एक को चुनना होता है।

सरकार कहती है कि तीन एकड़ तक खेत वाले किसान को लगान नहीं देनी है, लेकिन यहाँ दो बीघे खेत वाले से भी लगान ली जाती है। दुनिया के सबसे बड़े गणतंत्र का संविधान कैमीभूड़ की गलियों में मृतप्राय कराह रहा है। अमीन और तहसीलदार ने उसके पीछे